नैतिक कर्म (Moral Actions)

आचारशास्त्र का लक्ष्य मानव-आचरण के ऐसे आदर्श का निरूपण करना है जिसके मिलान करके किसी कर्म को उचित या अनुचित; शुभ या अशुभ ठहराया जा सके। वस्तुतः आचारशास्त्र का लक्ष्य मानव-आचरण के औचित्य-अनौचित्य का मूल्यांकन करना है। आचरण शास्त्र के अन्तर्गत तीन प्रकार के कर्मों की चर्चा की जाती है - नैतिक कर्म (Moral action), नीतिशून्य कर्म (non-moral action) और अनैतिक कर्म (immoral action)। नैतिक मूल्यांकन उन्हीं कर्मों का होता है जिनमें नैतिक गुण अर्थात् शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित आदि का प्रश्न हो। साधारणतः जो कर्म नैतिक दृष्टिकोण से उचित हो, उसे नैतिक कहा जाता है। यह नैतिक का संकुचित अर्थ है। इस नैतिक का विपरीतार्थक शब्द अनैतिक (Immoral) है। जो कर्म नैतिक दृष्टिकोण से बुरा या अनुचित होता है उसे ही अनुचित अनैतिक कर्म कहते हैं। तीसरे प्रकार के कर्म जिसे नित नीतिशून्य कर्म (non-moral action) कहते हैं, वे नैतिक गुणों से रहित हैं। उन्हें उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ आदि नहीं कहा जा सकता है। अर्थात् ये नैतिकता के क्षेत्र से बाहर हैं।

★ नैतिक प्रत्यय का अर्थ → नैतिक कर्म की व्याख्या करने से पहले नैतिक प्रत्यय का अर्थ समझना जरूरी है। नैतिक प्रत्यय का प्रयोग दो अर्थों में होता है - संकुचित और व्यापक अर्थ। संकुचित अर्थ में सत् अथवा उचित को नैतिक कहते हैं और असत् अथवा अनुचित को अनैतिक कहते हैं। वस्तुतः आचारशास्त्र में नैतिक प्रत्यय का प्रयोग संकुचित अर्थ में नहीं, बल्कि व्यापक अर्थ में किया जाता है। व्यापक अर्थ में नैतिक का अर्थ नैतिक गुण सम्पन्न है। अर्थात् जिन कर्मों का नैतिक निर्णय हो सके तथा जिन्हें सत् या असत्, उचित या अनुचित, धर्म या अधर्म कहा जा सके, उन्हें ही नैतिक कर्म कहते हैं। P.B Chatterjee says, "The word 'moral' means that in which moral quality rightness or wrongness, goodness or badness is present i.e, what is either right or wrong, good or bad." [Principles of Ethics] इसी प्रकार J. N Sinha says, "नैतिक का अर्थ है जिसमें नैतिक गुण वर्तमान हो"

अब स्वभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि कैसे कर्मों को नैतिक कर्म कहा जाता है? वस्तुतः ऐच्छिक कर्म (Voluntary actions) तथा अभ्यासजन्य कर्म (habitual actions) नैतिक कर्म

कहलाते हैं।

ऐच्छिक कर्म ही नैतिक कर्म है:

अब प्रश्न उठता है कि ऐच्छिक कर्म का क्या तात्पर्य है? 'ऐच्छिक कर्म' वैसी क्रिया है जिसका कोई आत्मचेतन पुरुष स्वतंत्र रूप से संकल्प कर तथा साधन एवं हेतु के पूर्व ज्ञान के बाद चुनाव बुद्धिमानी से करता है। नैतिक कर्मों को ऐच्छिक कर्म भी कहते हैं। जिस कर्म में इच्छा-स्वातंत्र्य (Freedom of will) का अभाव रहता है वैसे कर्मों को अनैच्छिक कर्म कहते हैं। अनैच्छिक कर्म पर नैतिक निर्णय नहीं दिया जा सकता है अर्थात उन्हें अच्छा-बुरा, शुभ-अशुभ की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। ऐच्छिक कर्म पर ही नैतिक निर्णय देना E का लक्ष्य रहता है। ये ऐच्छिक कर्म उचित या अनुचित शुभ या अशुभ; अच्छा-बुरा की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

अभ्यासजन्य कर्म भी नैतिक कर्म है – ऐच्छिक कर्म के अतिरिक्त अभ्यासजन्य कर्म भी नैतिक कर्म कहे जाते हैं। अभ्यासजन्य कर्म वे हैं, जो अभ्यास द्वारा किए जाते हैं। आरंभ में किसी कर्म को व्यक्ति इच्छा या संकल्प से करता है लेकिन जब बार-बार उस कर्म को करता है तो उस कर्म को करने की उसकी आदत बन जाती है। हालाँकि बाद में वैसे कर्म को करता है तो उस कर्म को करने के जिनका अभ्यास हो जाता है उसमें इच्छा, संकल्प या मानसिक द्वन्द्व नहीं होता है। फिर भी अभ्यासजन्य कर्म को नैतिक कर्म की श्रेणी में रखा जाता है; क्योंकि वैसे कर्मों के आरम्भ में इच्छा संकल्प आदि होता है। Eg:- आरंभ में कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से ही शराब पीना शुरू करता है, किन्तु बाद में बार-बार ऐसा करने से वह शराबी हो जाता है और शराब पीना उसका अभ्यासजन्य कर्म बन जाता है। इसलिए, अभ्यासजन्य कर्म को नैतिक कर्म के अन्तर्गत रखा जाता है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि M.A नैतिक गुण सम्पन्न होता है। इसलिए नैतिक कर्मों पर ही नैतिक निर्णय दिये जाते हैं। नैतिक कर्म 2 ऐच्छिक एवं अभ्यासजन्य।